शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 36-49

'जहाँ बाँस फूलते हैं' और 'उफ़्फ़' में चित्रित पूर्वोत्तर भारत का राजनीतिक जीवन

संजीव मण्डल

शोध-सार

1958 ई. में मिजोरम में अकाल पड़ा था। भारत सरकार ने उस समय भूखे मिजो लोगों की राहत के लिए कुछ नहीं किया। इसके फलस्वरूप 1966 ई. में लालडेङा के नेतृत्व में मिजोरम में सरकार के विरुद्ध विद्रोह हो गया। मिजो नेशनल आर्मी का गठन हुआ और मिजो युवक मिजोरम को स्वतंत्र करने की लड़ाई में लग गये। 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास में इस मिजो नेशनल आर्मी के सदस्यों और फौज के बीच हुई मुठभेड़ों के साथ-साथ मिजो नेशनल आर्मी के सदस्यों को आत्मसमर्पण कराने के लिए कुछ सुरक्षा अधिकारियों के द्वारा किए गए प्रयासों का चित्रण हुआ है। साथ ही मिजोरम की समाज-व्यवस्था, संस्कृति, इतिहास के साथ ही विद्रोहियों के कठिन जीवन, प्रशासन की कमजोर नीतियों, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, फौज का अत्याचार, सरकार की चालबाजी, विद्रोह के दौरान के उपद्रव, विद्रोही संगठनों की विचारधाराओं का भी चित्रण हुआ है।

'उफ़्फ़' उपन्यास में एक ऐसी कथा रची गई है, जिसमें मुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक, सचिव, एस.पी., डी.सी., समाजसेवी, उग्रवादी आदि राजनीतिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ पूरा तंत्र शामिल है। राजनीतिक उठा-पटक से पूरा उपन्यास भरा हुआ है। एक ईमानदार एस.पी., एक तेजस्वी वृद्ध, एस.पी.की समाजसेवी पत्नी और बेईमान तथा भ्रष्ट मुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक, सचिव, पुलिस, डी.सी.के बीच हुई लड़ाइयाँ ही पूरे उपन्यास को आकार देती हैं। इस उपन्यास में बांग्लादेशी घुसपैठियों के बढ़ते प्रभुत्व के प्रसंग हैं तो उल्फा समस्या भी है, भारत और असम की अखण्डता का प्रश्न है, केंद्र की ओर की गई उपेक्षा है, उग्रवाद की वजह से असम को हुई हानि के चित्रण के साथ-साथ रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार के साक्ष्य भी हैं।

बीजशब्द : *मिजोरम, मिजो नेशनल आर्मी, असम,आत्मसमर्पण, उग्रवाद, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार।*

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में साहित्य की रचना अनेक विधाओं में हुई है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आलोचना, संस्मरण, यात्रावृत्त, जीवनी आदि सभी विधाओं में विपुल परिमाण का साहित्य अब मौजूद है। पर हाशिए पर जो समाज हैं, उन पर बहुत कम लिखा गया है। पर कुछ समय से हाशिए पर के समाज को भी हिंदी साहित्य में स्थान मिलने लगा है। इसी कारण पूर्वोत्तर भारत को लेकर भी हिंदी में साहित्य की रचना हो रही है। पूर्वोत्तर भारत को आधार बनाकर लिखे गए श्रीप्रकाश मिश्र का 'जहाँ बाँस फूलते हैं' (1996 ई.) और प्रमोद कुमार तिवारी का 'उफ़्फ़' (2010 ई.) विशेष महत्त्व रखते हैं।

हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का चित्रण बहुत कम हुआ है। पूर्वोत्तर भारत पर लिखी गई हिंदी की कोई भी रचना हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है और इसी दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत पर लिखे गए श्रीप्रकाश मिश्र का 'जहाँ बाँस फूलते हैं' और प्रमोद कुमार तिवारी का 'उफ़्फ़' भी विशेष महत्त्व रखते हैं। अत: इन उपन्यासों को समझने के लिए किया गया प्रस्तुत अध्ययन भी महत्त्व रखता है ।

प्रस्तुत दोनों उपन्यासों को पूर्वोत्तर भारत के बाहर के दो लेखकों ने लिखा है। उन दोनों ने अपने-अपने कर्मजीवन का एक-एक भाग पूर्वोत्तर में व्यतीत किया और यहाँ के परिवेश को समझने का प्रयास किया। इस दौरान प्राप्त अपने अनुभवों से उन्होंने अपने उपन्यासों की रचना की। इन लेखकों द्वारा इस क्षेत्र को प्रतिफलित करने में कितनी सफलता मिली इसी को समझना ही इस अध्ययन का उद्देश्य है।

हिन्दी में पूर्वोत्तर को आधार बनाकर कई उपन्यासों का सृजन किया गया है। परंतु हम केवल दो उपन्यासों को ही ले रहे हैं। साथ ही हमने इन दोनों उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक जीवन की समीक्षा की है। प्रस्तुत अध्ययन की पद्धति समीक्षात्मक है। आधुनिक भाषा संस्था (Modern Language Association) के छठे संस्करण के नियमों के अनुसार इस शोध आलेख में अवतरण एवं ग्रंथ-सूची रखे गये हैं ।

विश्लेषण

श्रीप्रकाश मिश्र का उपन्यास 'जहाँ बाँस फूलते हैं' में सन् 1966 ई. में मिजोरम में हुए विद्रोह के बाद के समय को लिया गया है। पूरा उपन्यास विद्रोही संगठन 'मिजो नेशनल आर्मी' (एम.एन.ए.) और फौज तथा भारतीय सुरक्षा अधिकारियों के बीच की कार्यवाहियों के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। पूर्वदीप्ति शैली के द्वारा 1966 के विद्रोह की पृष्ठभूमि का भी चित्रण किया गया है।

विद्रोहियों के कठिन जीवन और कुछ सुरक्षा अधिकारियों द्वारा विद्रोहियों को हथियार डालने के लिए प्रेरित करने का चित्रण उपन्यासों में किया गया है।

प्रमोद कुमार तिवारी द्वारा लिखे गए उपन्यास 'उफ़्फ़' में असम की राजनीतिक उठा-पटक का चित्रण है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों में हैं- मुख्यमंत्री, मंत्री, विधायक, मंत्रियों के सचिव, भ्रष्ट और ईमानदार अधिकारी, एस.पी, डी.सी., पुलिस, राजनीतिक परिवेश को सुधारने के लिए जी-तोड़ मेहनत करते कुछ लोग। यह उपन्यास भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था और उस व्यवस्था के खिलाफ लड़ते एक ईमानदार एस.पी., एक रिटायर्ड पशु चिकित्सक और इस व्यवस्था को सुधारने के लिए सरकारी पद ग्रहण करने वाली एक समाज सेविका की कहानी है।

दोनों उपन्यासों में चित्रित पूर्वोत्तर के राजनीतिक जीवन पर निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत अध्ययन किया जा सकता है।

विद्रोही संगठनों का जीवन

'जहाँ बाँस फूलते हैं' में दिखाया गया है किविद्रोही संगठनों के सदस्यों का जीवन इतना आसान नहीं होता । फौज की गोली का शिकार होने के अलावा मिजो नेशनल आर्मी के लड़के प्राकृतिक आपदाओं से भी मारे जाते थे। एम.एन.ए. के सदस्य दोला और भुचेङा को दो दिन पहले आए बर्फ के तूफान में जमकर मृत दो लड़कों के शव मिलते हैं।

> दोला उठा। भुचेङा के कंधे थपथपाया और बोला- "यह सब परसो रात के बर्फीले तूफान की देन है, जो जहाँ था, वहीं जम गया।" (मिश्र 2011:19)

बागी बेमौत मरने को अपनी नियति में शामिल मानते थे।

> भुचेङा करीब आया तो बोला- "एक दिन हम सब ऐसे ही मर जाएँगे। हमारे पिंजर पत्तों-पत्थरों के बीच से मिलेंगे शायद।
>
> (मिश्र 2011:20)

दुश्मन से मदद लेना एम.एन.ए. के लड़ाके अपमानजनक मानते थे। जब बीमार दोला को भारतीय फौज ने खाना दिया तो उसने खाने से इनकार कर दिया। तब एक सिपाही दोला से कहता है-

> कपू ! यह बनने का समय नहीं है। जान बचाओ। स्वस्थ हो गए तो हम लोहा लेंगे ही। (मिश्र 2011:22)

1966 ई. में मिजोरम में विद्रोह की आग बड़ी तेजी से फैल गई थी। सात दिनों तक मिजोरम में विद्रोहियों का कब्जा रहा; पर फौज ने मिजोरम को विद्रोहियों के कब्जे से छुड़ा लिया।

मिजोरम को आजाद करने की लड़ाई लम्बी खींच जाने पर आम जनता त्रस्त हो गई थी। एक बूढ़ी कहती है-

> तीन वर्षों से ये लोग वाई से लड़ रहे हैं। पर अपना देश आजाद नहीं हुआ। हम जैसे जीते थे, उससे बदतर होते चले गए। आखिर कब वह आजाद होगा? (मिश्र 2011:166-167)

विद्रोही बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण ओहदों पर रहने वाले अधिकारियों को भी निशाना बना रहे थे। उपन्यास में बागी, मिजोरम के आई.जी.पी. को उनके ऑफिस में घुसकर मार डालते हैं ।

उपन्यास में बागियों को आत्मसमर्पण कराने की कोशिश करते हुए दिखाया गया है। उपन्यास में सेकेंड इन कमाण्ड डूरचुइया के साथ डेढ़ सौ एम.एन.ए. के बागियों ने गवर्नर के सामने आत्मसमर्पण किया। गवर्नर बागियों के पुनर्वास का भरोसा दिलाते हैं ।

बहुत से युवक यौवन की उमंग में सनसनीखेज जिंदगी जीने विद्रोही संगठनों में चले जाते हैं। पर जंगल की कठिन जिंदगी को सह न पाकर वापस आना चाहते है। पर जो फौज की नजर में एकबार बागी है वह हमेशा के लिए बागी ही रहता है। उसका मुख्यधारा में लौटना बहुत मुश्किल हो जाता है। उपन्यास का एक युवा पात्र जोवा भी यौवन की उमंग में जंगल चला जाता है; पर बाद में लौटना चाहता है।

शांति के मुद्दे तय हो जाने के बाद भारत के प्रधानमंत्री मिजोरम के बागी नेता लालडेङा को अपनी पार्टी में आ जाने को कहते हैं। लालडेङा ऐसा करने से इनकार कर देते हैं। इस पर यह घोषणा होती है कि लालडेङा जिस देश में जाना चाहे जाए। अपने सेनानायकों को जहाँ भेजना चाहे भेजे 48 घंटों का समय है उनके पास।

इसी प्रकार 'उफ़्फ़' उपन्यास में उल्फा के विद्रोहियों की गतिविधियों का चित्रण हुआ है। एस.पी.उल्फा के एक महत्त्वपूर्ण मेम्बर संजीव भराली को पकड़ लेता है तब रात-भर एस.पी.को फोन पर धमकियाँ मिलती हैं-

> साला, रंगबाजी करता है बे गैर-असमीया? असम का खा कर असम की आजादी के खिलाफ काम करता है? तुम्हारा बॉडी गार्ड ही मारेगा तुमको संजीव दा को हुआ कुछ तो...
>
> (तिवारी 2011:92)

एस.पी. अद्वैत संजीव भराली से उल्फा के द्वारा उगाही किए गए पैसे के अपव्यय की बात पर व्यंग्य करते हुए कहता है-

> एक्सटॉर्शन के पैसे के बल पर ढाका, मनीला और बैंकाक में ऐश करना क्या है? तुम सोचते हो, सारा पैसा तुम्हारी इस लड़ाई में लगता है?(तिवारी 2011:98)

एस.पी. संजीव भराली से असम के अंदर ही विभाजन की माँग करने वाले अलग-अलग समूहों की बात करता हुआ उल्फा के स्वाधीन असम की माँग को अप्रासंगिक हो जाने की बात करता है-

> तुमलोगों को तो, यार, असम के अंदर वाले ही उपनिवेशवादी समझते हैं- बोडो, कार्बी, मिसिंग, कोच। तुम्हारे साथ रहने को ही तैयार नहीं है। जिस राष्ट्र के लिए लड़ रहे हो, उसका नक्शा तो ठीक से बना लेना चाहिए न ! (तिवारी 2011:98)

प्रशासन की कमजोरी

हमारे देश का प्रशासन इतना धीमा काम करता है कि एक फैसला लेने में सालों लग जाते हैं। 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास का एक पात्र लालम्हुआका कहता है-

> और क्या ? अब मेरा ही देखिए ना काम के बदले अनाज की स्कीम को एप्रुबल के लिए गए वर्ष होने को आया, पर कोई जबाव नहीं। (मिश्र 2011:31)

मिजोरम में अकाल पड़ा था। भारत की केंद्र सरकार इसके लिए कुछ नहीं कर रही थी। 'जहाँ बाँस फूलते हैं' के पात्र झा और भुचेङा परवा नामक स्थान की तरफ जाते हुए एक रात जिस घर में रुके उस घर के गृहस्थ के पास केवल चार छाँटी चावल थे, जिससे उसे अपने तीन शिशुओं को न जाने कब तक पालना पड़ेगा। उपन्यासकार झा की मनस्थिति का बयान करते हुए लिखते हैं-

> रोज रेडिओ पर उभरने वाले विकास के आँकड़े उसे गाली की तरह लगे। (मिश्र 2011:50)

मिजोरम में फैल रही भूखमरी से अवगत कराकर मिजोरम में फैल सकने वाले विद्रोह को रोकने के लिए जब संबंधित अधिकारी की केंद्र सरकार को रिपोर्ट भेजी तब केंद्र सरकार ने उसे नागालैण्ड में तैनात अपने समकक्षियों के बराबर वेतन व भत्ता पाने के लिए यह मिजोरम में तैनात अधिकारियों की साजिश समझी है। सरकार ने आइजल के स्थानीय दरोगा पर कार्यवाही करने की धमकी दी और उसके 'इम्मेडिएट बस' को कच्छ के रन की तरफ स्थानांतरित कर दिया।

नौकरशाह एक दूसरे को काम नहीं करने देते हैं और हानि पहुँचाने का बहुत प्रयास करते हैं। 'उफ़्फ़' में भी इसका चित्रण पूरी सफलता से किया गया है। उपन्यास के पात्र मि. श्रीधर अपने विरुद्ध हो रही अन्य नौकरशाहों की कार्यवाही के बारे में कहते हैं-

> एम.एन.बरुआ और इनसाइडर लॉबी नाराज रहती है मुझसे, सी.एम. के कान भरती रहती है। क्या-क्या नहीं कहते। आउटसाइडर्स को महत्त्व देने से पॉलिटिकल बेस सिकुड़ जाएगा,

> लोकल सेंटीमेंट्स नहीं समझते बाहर के ऑफिसर... (तिवारी 2011:56)

काम के लिए मिले फण्ड का पैसा एकांश नौकरशाह अपने बेमतलब के कामों के लिए और मौज-मस्ती के लिए खर्च करते हैं। असम के नौकरशाह भी इस काम में पीछे नहीं हैं। एकांश नौकरशाहों की मौज-मस्ती का चित्रण करते हुए उपन्यास के एक पात्र एम.एन.बरुआ कहते हैं-

> ...हमारे लोगों को खाना नहीं मिलता और तुमलोग कैट शो, डॉग शो करवा रहे हो...गाय-गोरू को चरने की जगह नहीं है और गोल्फ खेल रहे हो...(तिवारी 2011:57)

मुख्यमंत्री इस बात से चिंतित हैं कि राज्य को केंद्र से मिले फण्ड का आधा भी खर्च नहीं हुआ है और आठ महीने गुजर चुके हैं-

> नवम्बर चल रहा है न यह। यानी आठ महीने बीत गये वित्तीय वर्ष के और आप कह रहे हैं...केंद्र से चिट्ठी आयी है न, इस दशा में और पैसा नहीं देंगे ? वित्त आयोग के ग्रांट का दूसरा इंस्टालमेंट मिलेगा इस प्रगति पर ? आप ही लोग बताइए, क्या करना है ? (तिवारी 2011:142)

देश के विकास में नौकरशाहों की नकारात्मक भूमिका के बारे में उपन्यास के पात्र मि. श्रीधर कहते हैं-

> आजादी के बाद इस देश के विकास में जो भूमिका रही है नौकरशाही की, उसकी समीक्षा करो तो क्या निष्कर्ष निकलता है? नौकरशाही एक नकारात्मक पक्ष रही है। जिस पुराने चेहरे की बात करते हैं न ये, उसी ने वह, क्या कहते हैं, वैक्यूअम या शून्य पैदा किया, जिसमें गंदी राजनीति को जगह मिली। (तिवारी 2011:177)

सत्ता की ऊँची कुर्सियों पर विराजमान लोगों की सही जानकारी और सही स्थिति की खबरें नीचे बैठे लोगों तक नहीं पहुँचने दी जाती हैं। उपन्यास में डी.सी.और विधायक दोनों मुख्यमंत्री को बाढ़ पीड़ितों के लिए तैयार किये गये सबसे अच्छे राहत शिविर दिखाने ले जाते हैं। मुख्यमंत्री के आने की खबर से कैसे रातों रात शिविर की काया पलट दिया जाता है, उसका चित्रण करते हुए उपन्यासकार ने लिखा है-

> रातों रात अलग-अलग टॉयलेट बनाये गये हैं औरतों और मर्दों के लिए। चापाकल लगा दिये गये हैं। चैम्बर ऑफ कॉमर्स वाले खाने के इंतजाम में लगे हैं।... साड़ियाँ और कम्बल बँटवाये गये हैं मुफ्त में।...हरेक बच्चे के हाथ में बिस्कुट का एक पैकेट थमा दिया गया है। (तिवारी 2011:325)

रिश्वतखोरी

रिश्वतखोरी हमारे समाज का अभिशाप है। कोई काम रिश्वत दिए बिना करा लेना बहुत बड़ी सफलता है। जैसे रिश्वत लिए बिना सरकारी कार्यालयों में काम नहीं होता, वैसे ही स्थिति मिजोरम की भी है। रिश्वत को सरकारी कर्मचारी दूध के ऊपर की मलाई समझते हैं। 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास का पात्र दोला स्कूल के लिए सरकारी फण्ड का पैसा लेने जाता है। कार्यालय का बंगाली बाबू उससे रिश्वत माँगता है। वह दोला से कहता है-

दर्जन भर मुर्गा या नीला नोट। तभी अर्जी साहब तक पहुँचेगी। (मिश्र 2011:66)

उसी प्रकार 'उफ़्फ़' उपन्यास में पुलिस विभाग की रिश्वतखोरी का चित्रण करते हुए उपन्यासकार ने लिखा है-

> खुद पैसा नहीं लेते, चलिए, अच्छी बात है, पर इस जिद का क्या मतलब कि डी.आई.जी. को भी नहीं कमाने देंगे, डी.जी.पी. तक भी कुछ नहीं पहुँचने देंगे ? (तिवारी 2011:16)

सरकारी अधिकारियों के आगे बढ़ने का नुस्खा बताते हुए रिश्वतखोरी का महिमामण्डन करते हुए 'उफ़्फ़' उपन्यास का एक पात्र सुरेश सरावगी कहता है-

> दो बातें बहुत जरूरी हो गयी हैं आगे बढ़ने के लिए- खुद कमाइए चाहे नहीं, नेताओं को कमाने दीजिए और यह मानकर चलिए कि जो चीज रियली मैटर करती है वह है आपके सम्पर्क। (तिवारी 2011:36)

शिक्षकों की नियुक्ति में हो रही धाँधली के बारे में 'उफ़्फ़' उपन्यास के पात्र डिम्बेश्वर बोरा कहते हैं-

> इधर कुछ दिनों से ग्रामीण अंचलों में यह खबर फैल गयी है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की नियुक्ति लाख-दो लाख घूस लेकर मंत्री, विधायक वगैरह करेंगे। कबाहट मची हुई है। बेरोजगार लड़के खेत बेचकर भी रुपये देने को तैयार हैं। नेताओं और दलालों के पीछे-पीछे घूम रहे हैं। (तिवारी 2011:206)

'उफ़्फ़' में शिक्षकों के चुनाव के लिए इंटरव्यू का केवल ढकोसला किया गया और रिश्वत लेकर लोगों को नौकरी दे दी गई-

> सहमति यह बनी थी कि सत्तारूढ़ दल के पाँचों विधायकों से दो-दो सौ नामों की सूची लेकर इंटरव्यू के ढकोसले के बाद उन सभी को नियुक्ति-पत्र निर्गत कर दिया जाएगा। हर उम्मीदवार से कम से कम दो लाख रुपये की राशि ले ली गयी थी। (तिवारी 2011:207)

फौज का अत्याचार

भारतीय फौज का पूर्वोत्तर के राज्यों में आचरण सही नहीं रहा है। उनकी बदसलूकी और अन्यायपूर्ण व्यवहार की शिकायतें अक्सर सुनने में

आती हैं। अगर फौज अपने देश के ही नागरिकों को विदेशी शत्रु मान लें तो इसके अलावा उनसे उम्मीद भी क्या की जा सकती है, 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास में बागियों की खोज में फौज द्वारा मासूम जनता पर किए गए अत्याचारों का वर्णन किया गया है। गाँव में घुसे बागियों का पता बताने के लिए निर्दोष पादरी का लिंग चीरकर नमक भर देने की घटना का वर्णन उपन्यास में है। इस उपन्यास में फौजी अफसर हवासिंह बागी ठहराकर पाँच मणिपुरी लकड़हारों को मार देता है।

पूर्वोत्तर के राज्यों में फौज अक्सर महिलाओं के साथ बदतमीजी और जोर-जबरदस्ती करते हैं। मिश्र जी ने लिखा है-

> कपी अभी भी दो मर्दों से अकेले लड़ रही थी। उसका पेटीकोट फट गया था, ब्लाउज के बटन टूट गए थे, और सिपाहियों के हाथों और कंधों पर कई-कई दाँत गड़ा चुकी थीं। एक-एक कर कई घरों से कपियों के चिल्लाने की आवाज आने लगी थी। (मिश्र 2011:143)

मिजोरम के विद्रोह के समय मिजो जनता फौज को नाराज करने से डरती थी। फौज को नाराज करने पर पूरा का पूरा गाँव तबाह कर दिया जाता था। उपन्यासकार ने तलाशी लेते फौज को देखकर एक मिजो की मन:स्थिति को स्पष्ट करते हुए लिखा है-

> कपू डरने लगा कि कोई छोकरा, न हो कोई त्लङवाल ही कहीं पत्थर न फैक बैठे और गाँव तबाह हो जाए। (मिश्र 2011:151-152)

फौज मिजो गाँवों को जलाकर लोगों को उजार देती थी। विद्रोह को दबाने और अपने साथियों की मौत का बदला लेने के लिए फौज क्रूर हो जाती थी ।

'उफ़्फ़' उपन्यास में भी कई ऐसे प्रसंग आये हैं, जहाँ फौज की बदसलूकी का चित्रण किया गया है। आर्मी के द्वारा गाँववालों पर ज्यादतियाँ की जाती हैं। आर्मी वाले जब साधारण लोगों पर अत्याचार करते-करते थक जाते हैं तब अपील करते हुए गाँव वालों को कहते हैं-

> ये जो लुच्चे-लपाड़े हैं न तुम्हारे। कुछ नहीं देंगे। सॉवरेनिटी की स्पेलिंग भी नहीं आती सालों को। हमसे कॉपरेट करो, आपका भी प्रोबलेम सॉल्व होगा, हमारे भी ।(तिवारी 2011:76)

डिम्बेश्वर बोरा, आर्मी द्वारा गाँव की बहू-बेटियों को अपमानित किए जाने की शिकायत करते हुए डी.सी. मि. मित्तल से कहते हैं-

> हमारा आत्म-सम्मान संकट में है। हमारी स्त्रियों की प्रतिष्ठा की दुश्मन हो गयी है यह राज्य-व्यवस्था। हमारी आँखों के सामने हमारी बहू-बेटियों को हाथ ऊपर कर खड़ा होने को कहा जाता है। मेरी बहू की आँखों में आँसू है और मैं

कुछ नहीं कर सकता। हमारी सेना हमारे साथ ऐसे पेश आती है। (तिवारी 2011:79)

फौज डिम्बेश्वर बोरा को देशद्रोह के आरोप में फँसाने की कोशिश भी करती है; पर एस.पी. की कुशलता के कारण डिम्बेश्वर बोरा इस आरोप से बच जाते हैं।

सरकार की चालबाजी

जो दल सत्ता में होता है, वह तरह-तरह के सही-गलत तरीकों से सत्ता में बना रहना चाहता है। वह अपने अनुकूल और विरोधियों के प्रतिकूल वातावरण बनाने के लिए सरकारी तंत्र और सुविधाओं का उपयोग-दुरोपयोग करता है। सत्ता में रहने वाले लोग लोगों को परम्परा की दुहाई देते हैं। वे परिवर्तन नहीं चाहते; क्योंकि परिवर्तन से यथास्थिति नहीं रहेगी। ऐसा होने पर उनके हाथ में सत्ता नहीं रहेगी। 'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास का पात्र मालसोमा कहता है-

> हर सरकारवाला चाहे वाई हो या मिजो- परम्परा की दुहाई देता है तब तक जब तक वह सहायक होती है- परिवर्तन को कोसता है; क्योंकि एक पूरी कौम को अंधेरे में रखना चाहता है- चाहे वह भारत सरकार हो या एम.एन.ए. सरकार... यही हाल नागालैण्ड में हैं, तिब्बत में है, लेबनान-इजराइल में है, सुदूर अफ्रीका के घने जंगलों के अँधेरे में बसने वाले कबीलों में है। (मिश्र 2011:112)

'उफ़्फ़' उपन्यास में भी सरकार के फरेबी चेहरे को बेनकाब किया गया है। राज्य की प्रचलित व्यवस्था की कमजोरियों का खुलासा करते हुए अक्षरा दिव्य बरफूकन से कहती है-

> कितने दु:ख की बात है न कि अपने ईमानदार और बहादुर अधिकारियों की कद्र नहीं की जाती अपनी व्यवस्था में।
>
> (तिवारी 2011:90)

डी.आई.जी. असम के उग्रवाद को सरकार द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बढ़ावा देने की बात का संकेत करते हुए एस.पी.से कहते हैं-

> केवल उग्रवाद की समस्या नहीं है यह। होती तो कब का टे बोल गयी होती। साले बहुत सारे निहित स्वार्थ इससे जुड़े हुए हैं। (तिवारी 2011:92)

'उफ़्फ़' उपन्यास का एक पात्र अम्लान गोगोई कहता है आतंकवाद के चिरस्थायी होने में सरकार का फायदा है, व्यापारी, प्रशासन का फायदा है-

> आतंकवाद से सबको फायदा है, सर। कोई नहीं चाहता यह बिजनेस बंद हो। इसी के चलते केंद्र ज्यादा पैसा और ध्यान दे रहा है; उस पैसे का हिसाब नहीं माँग रहा। (तिवारी 2011:249)

विद्रोही संगठनों की विचारधारा

विद्रोही संगठनों की भी एक सोच होती है, एक विचारधारा होती है, जिसके तहत वे अपने कार्य को अंजाम देते हैं। मिजो बागी भी पूर्वोत्तर के बाकी विद्रोहियों की तरह यह सोचते थे कि भारत सरकार ने उनकी जमीन पर कब्जा कर उन्हें गुलाम बना लिया है।

'जहाँ बाँस फूलते हैं' का एक पात्र भुचेङा भारत के जनतंत्र को नकली और ऐबों से भरा हुआ बताते हुए अपनी राज्य-व्यवस्था को बेहतर मानता है-

> जिस आदर्श समतावादी राज्य की कल्पना तुम करते हो, हम उसे जीते हैं। तुम वाई हमारी इस संस्कृति को विनष्ट कर अपना नकली समाजवाद, जनतंत्रवाद थोप रहे हो। उसकी बुराइयों को तुम स्वयं भोग रहे हो और हमें भी भोगाना चाहते हो... (मिश्र 2011:188)

भुचेङा के माइकल से कही गई निम्नलिखित बातों से विद्रोहियों की विचारधारा को समझा जा सकता है-

> नहीं, शांति से कुछ भी नहीं हो सकता। शांति भी नहीं। सिर्फ यथास्थिति कायम रखी जा सकती है। कुछ नया नहीं बनाया जा सकता। और मिजोरम में जेसू के राज्य की स्थापना एक नई बात होगी। (मिश्र 2011:188)

'उफ़्फ़' उपन्यास में उल्फा के एक महत्त्वपूर्ण सदस्य संजीव भराली निम्नलिखित कथन से उल्फा की सोच को समझा जा सकता है-

> पाकिस्तान के साथ मिलकर कश्मीर आजाद हो जाएगा...नेपाल चीन के कब्जे में चला जाएगा और बंगाल भी उसी के साथ मिल जाएगा...तमिलनाडु लिट्टे से मिलकर अलग हो जाएगा...नक्सलाइट लोग तेलंगाना, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ वगैरह में अलग देश बना लेंगे और हमको लगता है, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात वगैरह विकसित राज्य उत्तर भारत वालों से अलग हो जाएँगे। (तिवारी 2011:98-99)

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार आजाद भारत की बहुत बड़ी समस्या रही है। यदि आज हम इतने पिछड़े हुए हैं, सुविधाओं से महरूम है तो इसके पीछे कारण है हमारे नेताओं, अधिकारियों, पुलिस और पद पर काबिज अधिकतर व्यक्तियों का भ्रष्ट होना।

'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास में दिखाया गया है कि मिजोरम में लोग भूख से तड़प रहे थे; किंतु बंगाली जमाखोर चीजों के दाम बढ़ाने के लिए सामान बेंचना छोड़कर बैठे थे। लालडेङा भाषण में कहते हैं-

> ...बहुत दिनों से ये धनी लोग, ये वाई लोग, लोगों का सुख अपनी तिजोरियों में कैद रख चुके

हैं। गरीबों का आहार इनके गोदामों में मूल्य-वृद्धि की प्रतीक्षा करते करते सड़ रहा है। समय आ गया है कि वे अब अपनी तिजोरियों और गोदामों से महरूम हो। उनकी अट्टालिकाओं को गिरा दिया जाए और सारे वित्त को इन धरती के बेटों इन झुके लोगों में बाँट दिया जाए।

(मिश्र 2011:130)

'उफ़्फ़' उपन्यास में तो नेता भ्रष्ट है, डी.सी.भ्रष्ट है, शिक्षक भ्रष्ट है, डी.जी.पी. भ्रष्ट है, सब लोग भ्रष्ट हैं। मि. मित्तल के चरित्र के माध्यम से एक बेईमान डी.सी. के चरित्र को उभारने का प्रयास उपन्यासकार ने किया है-

मि. मित्तल सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत आने वाले किरासन तेल पर प्रति लीटर पचास पैसे के हिसाब से कमिशन भी लेते हैं, कालाबाजारी करने वाले डीलरों को पकड़ते भी रहते हैं, गड़बड़ियों को दूर करने के लिए समय-समय पर दिशा-निर्देश भी जारी करते रहते हैं।

(तिवारी 2011:37)

'उफ़्फ़' उपन्यास में शिक्षकों की अकर्मण्यता और शिक्षा विभाग के भ्रष्टाचार के संबंध में डिम्बेश्वर बोरा एस.पी.से कहते हैं-

पत्थर तो हमारे बच्चे भी.....पर वे उन शिक्षकों को नहीं लगते, जो स्कूल समय पर नहीं आते या पढ़ाते नहीं ठीक से, शिक्षा विभाग के उन अधिकारियों को नहीं लगते, जो सौ-पचास लेकर उनकी अनुपस्थिति को आकस्मिक अवकाश में बदल देने को तैयार बैठे हैं।

(तिवारी 2011:165)

'उफ़्फ़' उपन्यास में सी.एम. दिव्य बरफूकन खुद ही कहते हैं नेताओं का राजनीति में आने का उद्देश्य पैसा कमाना होता है-

केवल अधिकारियों के 'ट्रांसफर-पोस्टिंग के धंधे को बंद कर दो, इनमें आधे तौबा कर लेंगे राजनीति से। और बहालियों और ठेकों में इनकी घुसपैठ खत्म कर दो तो ढूँढ़ने मुश्किल हो जाएगा नेताओं को। (तिवारी 2011:199)

अखबारों में भ्रष्ट प्रशासन की अकर्मण्यता के नमूने किन शब्दों में प्रकाशित होते हैं उसके बारे में एक पात्र का उद्गार देखिए-

बस आज का, एक दिन का अखबार देख लीजिए....मीड डे मील का चावल कालाबाजार में...आँगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण में धाँधली...पाठ्य पुस्तकें नहीं पहुँचीं विद्यालयों में...प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का काम शुरू नहीं हुआ... (तिवारी 2011:278)

बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या

स्वतंत्रता के बाद से ही असम और पूर्वोत्तर के राज्यों में बांग्लादेश से लाखों की संख्या में घुसपैठिये दाखिल होने लगे। असम में अब उन

लोगों का प्रभुत्त्व इतना बढ़ गया है कि उनके हितों को वरीयता दी जाती है।

'उफ़्फ़' उपन्यास के पात्र मंत्री अतुल गोस्वामी बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या पर सरकार के नरम रवैये पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं-

> जो मुश्किल से तीन प्रतिशत है राज्य की आबादी का या उससे भी कम है, उन्हें खुश रखने के लिए तो स्वायत्त परिषदें देनी पड़ रही हैं, तो जो तीस प्रतिशत से भी अधिक हो चले हैं आबादी का, उन्हें तो जो माँगे, वही देना पड़ेगा? (तिवारी 2011:44)

अखण्डता का प्रश्न

असम को भारत का अखण्ड हिस्सा बनाए रखने के लिए क्या-क्या उपाय नहीं किए जाते, पर असम खुद खण्ड-खण्ड हो रहा है इस पर कोई विचार नहीं करता। 'उफ़्फ़' उपन्यास में मंत्री अतुल गोस्वामी कहते हैं-

> सारा जोर इस बात पर कि असम भारत का अखण्ड हिस्सा बना रहे। इस पर जरा भी नहीं कि खुद असम भी अखण्ड बना रहे।
>
> (तिवारी 2011:44)

फजलुल हक खण्ड-खण्ड होते असम के बारे में कहता है-

> मुसलमान ही बर्दाश्त कर रहा है। नागा, मिजो, खासी, गारो सब अलग हो गये। अब कार्बी, बोड़ो, मिसिंग, राभा, लालुंग वगैरह भी अलग होना चाहते हैं।(तिवारी 2011:111)

उग्रवाद से हुई हानि का चित्रण

उग्रवाद की वजह से पूर्वोत्तर के राज्य अपेक्षित विकास नहीं कर पाये। 'उफ़्फ़' उपन्यास में उग्रवाद से हुई हानि का चित्रण करते हुए एस.पी.उल्फा के मेम्बर संजीव भराली से कहता है-

> तुमलोग बीस साल खा गये इस राज्य के लोगों का। वैसे बीस साल जिनमें आर्थिक और प्रौद्योगिक विकास की रफ्तार पिछले सौ बरसों से भी तेज थी। (तिवारी 2011:85)

केंद्र सरकार की उपेक्षा

असम और पूर्वोत्तर के राज्यों को केंद्र सरकार उपेक्षा की नजर से देखती आई है। 'उफ़्फ़' उपन्यास में केंद्र सरकार के असम को उपनिवेश की तरह इस्तेमाल करने का खुलासा करता हुआ उल्फा का सदस्य मुनिन शर्मा कहता है-

> कोयले और तेल की कितनी रायल्टी मिलती है असम को। मिला-जुलाकर पाँच सौ करोड़ सालाना से भी कम।...केवल हमारा कोयला, तेल और चाय देकर हमारा पिण्ड छोड़ दे तो हम लोग बीस हजार करोड़ रुपये का सालाना बजट बना पाएँगे। (तिवारी 2011:102)

असम के साथ केंद्र के अनुपयुक्त व्यवहार का पर्दाफाश करते हुए अम्लान कहता है-

> हमारी भौगोलिक स्थिति के साथ खिलवाड़ होता रहा, हमारी भाषा को हाशिये पर धकेलने का षड्यंत्र होता रहा, सरकारी नौकरियों तक में बाहरी लोगों को ठुँसा जाता रहा, हमारी जायज माँगों को दरकिनार करने के लिए चाय बागानों में बाहर के मजदूर भरे गये, हमारी नदियों, जंगल, खनिज, तेल किसी भी चीज की सही कीमत नहीं आँकी गयी ।...हमारी जातीय अस्मिता और जायज अपेक्षाओं के साथ भारत राष्ट्र की धोखाधड़ी तो विरासत है हमारी।
>
> (तिवारी 2011:249)

निष्कर्ष

ऊपर की आलोचना के बाद निम्नलिखित स्थापनाएँ की जा सकती हैं-

- विद्रोही संगठनों का जीवन बहुत कठिन होता है। यौवन की उमंग में ऐसे संगठनों के साथ जुड़ने वाले बहुत से लड़के बाद में पछताते हैं ।
- देश का प्रशासन कमजोर और भ्रष्ट है। उसमें ईमानदार लोगों की जरूरत है।
- भारतीय फौज पूर्वोत्तर के लोगों के साथ भी सद्व्यवहार प्रायः नहीं करते।
- सत्तारूढ़ दल सत्ता में बने रहने के लिए सही-गलत हर तरीके को आजमाता है ।
- विद्रोही संगठनों की सोच है कि भारत ने पूर्वोत्तर के राज्य पर कब्जा करके उन्हें गुलाम बना लिया है। भारत सरकार उपनिवेशवाद को बढ़ावा दे रही है ।
- बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या को जल्दी ही हल नहीं किया गया तो असम के मूल बासिंदे अल्पसंख्यक बन जायेंगे।
- असम भारत का अखंड हिस्सा बना रहे इसके साथ-साथ असम को अखंड बनाये रखने पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए ।
- उग्रवाद ने पूर्वोत्तर के राज्यों के स्वस्थ विकास में बाधा पहुँचाई है ।
- केंद्र सरकार पूर्वोत्तर के राज्यों की उपेक्षा करती है। उनके संसाधनों को लूटती है बदले में बहुत कम देती है ।

'जहाँ बाँस फूलते हैं' और 'उफ़्फ़' दोनों उपन्यासों में उपन्यासकारों ने पूर्वोत्तर के राजनीतिक जीवन को संपूर्णता में चित्रित किया है। पूर्वोत्तर में सैकड़ों विद्रोही संगठन हैं जो अपनी-अपनी माँगों को लेकर सरकार के साथ संघर्ष कर रहे हैं। रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार अभिशाप की तरह समाज में फैल गया है। फौज की बदसलूकियों से जनता त्रस्त है। प्रशासन के कार्य धीमी गति से होते हैं। सत्तारूढ़ दल सत्ता में बने रहने के लिए हर संभव कोशिश करता है। विद्रोही संगठन मानते हैं कि भारत ने पूर्वोत्तर के राज्यों पर कब्जा कर लिया है। बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या और केंद्र की

पूर्वोत्तर के राज्य के प्रति उपेक्षा भी कठिन समस्याएँ हैं।

ग्रंथ-सूची :

तिवारी, प्रमोद कुमार. उफ़्फ़. नयी दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2011.

मिश्र, श्रीप्रकाश. जहाँ बाँस फूलते हैं. दिल्ली: यश पब्लिकेशन्स, 2011.

संपर्क-सूत्र :
शोधार्थी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय
ई-मेइल: 666mandal@gmail.com
मोबाइल: 8135054304